'Sketch the character of नचिकेता'

प्र०→ कठोपनिषद् के आधार पर नचिकेता का चरित्र चित्रण करें।

Ans→ कठोपनिषद् अत्यन्त सुबोध एवं सरल शैली में यम तथा नचिकेता के सम्वाद के माध्यम से ब्रह्मविद्या का वर्णन प्रस्तुत करता है। इसमें उपन्यस्त नचिकेता का चरित्र पाठकों के समक्ष अनुपम आदर्श को उपस्थित करता है। वह बालक है, लेकिन बुद्धिवृद्ध है। अंग्रेजी का old head on a young shoulder, यह कथन उसपर अक्षरशः लागू होता है। उसमें स्वार्थपरता का लेश भी नहीं है। वह विश्व के कल्याणार्थ ही अहर्निशं सोचता रहता है। जब वह देखता है कि उसके पिता ब्राह्मणों को दान में जीर्ण-शीर्ण गायों को देते हैं, तथा दुध देनेवाली पुष्ट गायों को उसके लिए छोड़ देते हैं तो बाल्यावस्था होने पर भी पितृभक्ति उसे चुप नहीं रहने देती। वह बाल्यसुलभ चपलता को प्रदर्शित करते हुए अपने पूज्य पिता वाजश्रवा से पूछ बैठता है — 'तत कस्मै मां दास्यसि।' उसका अपने पिता के प्रति यह प्रश्न बिल्कुल उचित था, क्योंकि विश्वजित याग में सर्वस्व दान किया जाता है। इस याग में उसके सदृश सत्पुत्र का दान किए बिना उसकी पूर्णता ही नहीं हो सकती थी। वस्तुतः सर्वस्व-दान तो तभी हो सकता है, जब कोई वस्तु अपनी न रह जाये। लेकिन इस याग में वाजश्रवा के द्वारा अपने पुत्र के मोह से ही ब्राह्मणों को निकृष्ट एवम् निरर्थक गौएँ दी जा रही थीं। अतः इस मोह से पिता का उद्धार करना उसके सदृश ज्ञानवृद्ध बालक के लिए परमावश्यक एवं उचित ही था। उसके बार-बार पूछने पर उसके पिता क्रोध के आवेश में उत्तर देते हैं — 'मृत्यवे त्वा ददामि।' नचिकेता पूर्ण रूप से समझता है कि पिता की यह उक्ति क्रोध के कारण है, लेकिन वह उनके कथन की उपेक्षा नहीं करता। यह एक आदर्श पुत्र है।

कृष्णकु

अतः वह अपने पिता के वचन की रक्षा करना अपना परम कर्तव्य समझता है। पिता के मोहजनित वात्सल्य तथा अपने ऐहिक जीवन को सत्य की वेदी पर निछावर कर देता है। राम ने भी तो अपने पूज्य पिता दशरथ के कैकयी के प्रति दिए गए वचन की गंभीरता का निर्णय करने की कोई आवश्यकता न समझकर चौदह वर्षों के लिए वनगमन किया था। मातृभक्त पाण्डवों ने भी अपनी पूजनीया माता कुन्ती का वचन मान-कर द्रौपदी से विवाह कर लिया था।

बहुत लोगों को इस प्रकार के अनभिप्रेत एवं अनर्गल वचन की मार्यादा की रक्षा के लिए इतना सरदर्द मोल लेना कोरी भूल तथा भोलापन ही प्रतीत होगा। लेकिन गंभीर विचारणा के पश्चात् उन्हें इस रहस्य की अवगति स्वतः हो जायगी। योगदर्शन के साधनपाद में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह — इन पाँचों यमों का नाम-निर्देश करने के अनन्तर ही कहा गया है, — 'जातिदेश कालसमयानवच्छिन्नाः सार्वभौमा महाव्रतम्' अर्थात जाति, देश, काल तथा कर्तव्यानुरोध की अपेक्षा न करते हुए इनका सर्वथा पालन करना ही महाव्रत है, तथा जाति, देश, कालादि की अपेक्षा से इनका पालन करना अल्पव्रत कहलाता है। अल्पव्रत में ही लोकाचार, सुविधा तथा हानि लाभादि के विचार की गुंजाइश है। उसे हम व्यावहारिक धर्म भी कह सकते हैं। यह किसी विशेष सिद्धि का कारण नहीं हो सकता। सिद्धियों की प्राप्ति तो महाव्रत से ही होती है। महाव्रत व्यवहारी लोगों की दृष्टि में भले ही व्यर्थ आग्रह, तथा मानसिक संकीर्णता जान पड़े, लेकिन परिणाम में वह सर्वदा मंगलमय ही होता है। भगवान राम का वनवास, परशुरामजी का मातृवध, पुरु का यौवनदान तथा पाँचो पाण्डवों का एक ही द्रौपदी के साथ विवाह करना — ये सारे के सारे प्रसंग इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं। ऐसा ही नचिकेता के साथ भी होता है। उसका यमलोक-गमन उसी के लिए नहीं, अपितु

उसके पिता के लिए एवं सारे संसार के लिए भी कल्याणकर सिद्ध होता है।

आदर्श पुत्र होने के कारण ही वह पिता के वचन की पूर्ति हेतु यमलोक-गमन करता है। यमराज अपने निवास स्थान से अनुपस्थित है। यमराज से जबतक उसकी भेंट नहीं होती तबतक वह अन्न-जल कुछ भी ग्रहण नहीं करता। इससे उसकी प्रौढ़ सत्यनिष्ठता का पता चलता है। उसका शरीर यमराज को दान में दिया जा चुका है। अतः अब उसके शरीर पर यमराज का पूर्ण अधिकार है। वह तो अपने को यमराज के हवाले कर अपने प्रथम परम कर्तव्य का पालन करता है।

तीन दिनों के पश्चात् यमराज अपने निवास पर आता है। वह नचिकेता के एक-एक दिन के उपवास के लिए एक-एक वर देने की प्रतिज्ञा करता है। अतः नचिकेता यमराज से तीन वरों की याचना करता है। इन वरों के क्रम में भी एक अद्भुत रहस्य है। उसका प्रथम वर ही पितृतोष है, आत्मतोष नहीं। वह पिता की सत्य की रक्षा के लिए यमलोक चला आया है। अतः उसके पिता का खिन्न हो जाना बिल्कुल स्वभाविक है। इसलिए नचिकेता को सर्वप्रथम यही आवश्यक जान पड़ता है कि उन्हें शान्ति मिलनी चाहिए। अतः पितृपरितोष हेतु याचित प्रथम वर नचिकेता की निःस्वार्थ भावना में निखार ला देता है।

लौकिक शान्ति के अनन्तर मनुष्य को स्वभाव से ही पारलौकिक सुख की कामना होती है। जब यह कामना मनुष्य में प्रबल हो जाती है तो वह ऐहिक सुख के बारे में सोचता तक नहीं। अतः नचिकेता द्वितीय वर से पारलौकिक सुख अर्थात् स्वर्गलोक की प्राप्ति का साधनभूत अग्नि-विज्ञान की याचना करता है। लेकिन यहाँ ध्यातव्य है कि नचिकेता स्वयं स्वर्गसुख का इच्छुक नहीं था। जिस प्रकार उसके प्रथम वर में पिता की शान्तिकामना है, उसी प्रकार उसके द्वितीय वर में

मनुष्य मात्र की हितचिन्ता है। वह सबके हित में ही अपना हित समझता है। अतः हम देखते हैं कि नचिकेता अपने कल्याण की अपेक्षा लोककल्याण को अधिक महत्व देता है। इस प्रकार की भावना से ओत-प्रोत नचिकेता-सदृश चरित्र ही हो सकता है।

नचिकेता के तृतीय वर में आत्म-दर्शन की तीव्र जिज्ञासा स्पष्ट रूप से प्रतीत होती है। आत्मा के अस्तित्व की विवेचना की माँग के पीछे भी लोककल्याण की भावना ही काम करती है। यमराज उसकी जिज्ञासा की परीक्षा के लिए उसे तरह-तरह के प्रलोभनों की ओर आकृष्ट करता है। लेकिन आत्मामृत के लिए लालायित नचिकेता उन प्रलोभनों के प्रति जरा भी आकृष्ट नहीं होता और कहता है — 'वरस्तु मे वरणीयः स एव, नान्यं तस्मान्नचिकेता वृणीते।' विवेकी नचिकेता को लौकिक एवं पारलौकिक भोगों से सर्वथा उदासीन देखकर यमराज अन्ततोगत्वा ज्ञानामृत की वर्षा करता है। वह ज्ञानवर्षा ही सम्पूर्ण लोकों के कल्याणार्थ आज भी कठोपनिषद् के रूप में विद्यमान है।

उपर्युक्त विवरणों से यह स्पष्ट है कि नचिकेता का चरित्र अद्भुत है। वह स्वार्थ की बात कभी सोचता ही नहीं। वस्तुतः विश्व के कल्याणार्थ ही उसका अवतरण हुआ था। लोककल्याण की भावना से वह ओत-प्रोत था। धन्य है, वह भारत भूमि जिसने नचिकेता जैसे आदर्श चरित्र को जन्म दिया।